

हिन्दी

अध्याय-2: मियाँ नसीरुद्दीन



सारांश

मियाँ नसीरुद्दीन शब्दचित्र हम-हशमत नामक संग्रह से लिया गया है। इसमें खानदानी नानबाई मियाँ नसीरुद्दीन के व्यक्तित्व, रुचियों और स्वभाव का शब्दचित्र खींचा गया है। मियाँ नसीरुद्दीन अपने मसीहाई अंदाज से रोटी पकाने की कला और उसमें अपनी खानदानी महारत बताते हैं। वे ऐसे इंसान का भी प्रतिनिधित्व करते हैं जो अपने पेशे को कला का दर्जा देते हैं और करके सीखने को असली हुनर मानते हैं।

लेखिका बताती है कि एक दिन वह मटियामहल के गद्वैया मुहल्ले की तरफ निकली तो एक अंधेरी व मामूली-सी दुकान पर आटे का ढेर सनते देखकर उसे कुछ जानने का मन हुआ। पूछताछ करने पर पता चला कि यह खानदानी नानबाई मियाँ नसीरुद्दीन की दुकान है। ये छप्पन किस्म की रोटियाँ बनाने के लिए मशहूर हैं। मियाँ चारपाई पर बैठे बीड़ी पी रहे थे। उनके चेहरे पर अनुभव और आँखों में चुस्ती व माथे पर कारीगर के तेवर थे।

लेखिका के प्रश्न पूछने की बात पर उन्होंने अखबारों पर व्यंग्य किया। वे अखबार बनाने वाले व पढ़ने वाले दोनों को निठल्ला समझते हैं। लेखिका ने प्रश्न पूछा कि आपने इतनी तरह की रोटियाँ बनाने का गुण कहाँ से सीखा? उन्होंने बेपरवाही से जवाब दिया कि यह उनका खानदानी पेशा है। इनके वालिद मियाँ बरकत शाही नानबाई थे और उनके दादा आला नानबाई मियाँ कल्लन थे। उन्होंने खानदानी शान का अहसास करते हुए बताया कि उन्होंने यह काम अपने पिता से सीखा।

नसीरुद्दीन ने बताया कि हमने यह सब मेहनत से सीखा। जिस तरह बच्चा पहले अलिफ से शुरू होकर आगे बढ़ता है या फिर कच्ची, पक्की, दूसरी से होते हुए ऊँची जमात में पहुँच जाता है, उसी तरह हमने भी छोटे-छोटे काम-बर्तन धोना, भट्टी बनाना, भट्टी को आँच देना आदि करके यह हुनर पाया है। तालीम की तालीम भी बड़ी चीज होती है।

खानदान के नाम पर वे गर्व से फूल उठते हैं। उन्होंने बताया कि एक बार बादशाह सलामत ने उनके बुर्जुगों से कहा कि ऐसी चीज बनाओ जो आग से न पके, न पानी से बने। उन्होंने ऐसी चीज बनाई और बादशाह को खूब पसंद आई। वे बड़ाई करते हैं कि खानदानी नानबाई कुएँ में भी रोटी पका सकता है। लेखिका ने इस कहावत की सच्चाई पर प्रश्नचिह्न लगाया तो वे भड़क उठे। लेखिका जानना चाहती थी कि उनके बुजुर्ग किस बादशाह के यहाँ काम करते थे। अब उनका स्वर बदल

गया। वे बादशाह का नाम स्वयं भी नहीं जानते थे। वे इधर-उधर की बातें करने लगे। अंत में खीझकर बोले कि आपको कौन-सा उस बादशाह के नाम चिट्ठी-पत्री भेजनी है।

लेखिका से पीछा छुड़ाने की गरज से उन्होंने बब्बन मियाँ को भट्टी सुलगाने का आदेश दिया। लेखिका ने उनके बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि वे उन्हें मजदूरी देते हैं। लेखिका ने रोटियों की किस्में जानने की इच्छा जताई तो उन्होंने फटाफट नाम गिनवा दिए। फिर तुनक कर बोले-तुनकी पापड़ से ज्यादा महीन होती है। फिर वे यादों में खो गए और कहने लगे कि अब समय बदल गया है। अब खाने-पकाने का शौक पहले की तरह नहीं रह गया है और न अब कद्र करने वाले हैं। अब तो भारी और मोटी तंदूरी रोटी का बोलबाला है। हर व्यक्ति जल्दी में है।

SHIVOM CLASSES
8696608541

NCERT SOLUTIONS

अभ्यास प्रश्न (पृष्ठ संख्या 28-29)

पाठ के साथ

प्रश्न. 1 मियाँ नसीरुद्दीन को नानबाइयों का मसीहा क्यों कहा गया है?

उत्तर- मियाँ नसीरुद्दीन को नानबाइयों का मसीहा कहा गया है, क्योंकि वे मसीहाई अंदाज में रोटी पकाने की कला का बखान करते हैं। वे स्वयं भी छप्पन तरह की रोटियाँ बनाने के लिए प्रसिद्ध हैं। उनका खानदान वर्षों से इस काम में लगा हुआ है। वे रोटी बनाने को कला मानते हैं तथा स्वयं को उस्ताद कहते हैं। उनका बातचीत करने का ढंग भी महान कलाकारों जैसा है। अन्य नानबाई सिर्फ रोटी पकाते हैं। वे नया कुछ नहीं कर पाते।

प्रश्न. 2 लेखिका मियाँ नसीरुद्दीन के पास क्यों गई थीं?

उत्तर- लेखिका मियाँ नसीरुद्दीन के पास इसलिए गई थी क्योंकि वह रोटी बनाने की कारीगरी के बारे में जानकारी हासिल करके दूसरे लोगों को बताना चाहती थी। मियाँ नसीरुद्दीन छप्पन तरह की रोटियाँ बनाने के लिए मशहूर थे। वह उनकी इस कारीगरी का रहस्य भी जानना चाहती थी।

प्रश्न. 3 बादशाह के नाम का प्रसंग आते ही लेखिका की बातों में मियाँ नसीरुद्दीन की दिलचस्पी क्यों खत्म होने लगी?

उत्तर- लेखिका ने जब मियाँ नसीरुद्दीन से उनके खानदानी नानबाई होने का रहस्य पूछा तो उन्होंने बताया कि उनके बुजुर्ग बादशाह के लिए भी रोटियाँ बनाते थे। लेखिका ने उनसे बादशाह का नाम पूछा तो उनकी दिलचस्पी लेखिका की बातों में खत्म होने लगी। सच्चाई यह थी कि वे किसी बादशाह का नाम नहीं जानते थे और न ही उनके परिवार का किसी बादशाह से संबंध था। बादशाह का बावची होने की बात उन्होंने अपने परिवार की बड़ाई करने के लिए कह दिया था। बादशाह का प्रसंग आते ही वे बेरुखी दिखाने लगे।

प्रश्न. 4 'मियाँ नसीरुद्दीन के चेहरे पर किसी दबे हुए अंधड़ के आसार देख यह मजमून न छेड़ने का फैसला किया'-इस कथन के पहले और बाद के प्रसंग का उल्लेख करते हुए इसे स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इस कथन से पूर्व लेखिका ने मियाँ नसीरुद्दीन से पूछा था कि उनके दादा और वालिद मरहूम किस बादशाह के शाही बावर्चीखाने में खिदमत करते थे? इस पर मियाँ बिगड़ गए और उन्होंने खफा होकर कहा-क्या चिट्ठी भेजोगे ? जो नाम पूछ रहे हो? इसी प्रश्न के बाद उनकी दिलचस्पी खत्म हो गई। अब उनके चेहरे पर ऐसा भाव उभर आया मानो वे किसी तूफान को दबाए हुए बैठे हैं। उसके बाद लेखिका के मन में आया कि पूछ लें कि आपके कितने बेटे-बेटियाँ हैं। किंतु लेखिका ने उनकी दशा देखकर यह प्रश्न नहीं किया। फिर लेखिका ने उनसे जानना चाहा कि कारीगर लोग आपकी शागिर्दी करते हैं? तो मियाँ ने गुस्से में उत्तर दिया कि खाली शागिर्दी ही नहीं, दो रुपए मन आटा और चार रुपए मन मैदा के हिसाब से इन्हें मजूरी भी देता हूँ। लेखिका द्वारा रोटियों का नाम पूछने पर भी मियाँ ने पल्ला झाड़ते हुए उसे कुछ रोटियों । के नाम गिना दिए। इस प्रकार मियाँ नसीरुद्दीन के गुस्से के कारण लेखिका उनसे व्यक्तिगत प्रश्न न कर सकी।

प्रश्न. 5 पाठ में मियाँ नसीरुद्दीन का शब्द-चित्र लेखिका ने कैसे खींचा है?

उत्तर- लेखिका ने खानदानी नानबाई नसीरुद्दीन के व्यक्तित्व, रुचियों और स्वभाव का शब्द-चित्र खींचा है -

व्यक्तित्व - वे बड़े ही बातूनी और अपने मुँह मियाँ मिट्टू बननेवाले बुजुर्ग थे। उनका व्यक्तित्व बड़ा ही साधारण-सा था, पर वे बड़े मसीहाई अंदाज़ में रोटी पकाते थे।

स्वभाव - उनके स्वभाव में रुखाई अधिक और स्नेह कम था। वे सीख और तालीम के विषय में बड़े स्पष्ट थे। उनका मानना था कि काम तो करने से ही आता है। सदा काम में लगे रहते थे। बोलते भी अधिक थे।

रुचियाँ - वे स्वयं को किसी पंचहजारी से कम नहीं समझते थे। बादशाह सलामत की बातें तो ऐसे बताते थे मानो अभी बादशाह के महल से ही आ रहे हों। उनकी रुचि उच्च पद, मान और ख्याति की ही थी। वे अपने हुनर में माहिर थे।

उदाहरण - (मियाँ चारपाई पर बैठे बीड़ी का मज़ा ले रहे हैं। मौसमों की मार से पका चेहरा, आँखों में काइयाँ भोलापन और पेशानी पर मँजे हुए कारीगर के तेवर), इस प्रकार का शब्द चित्र पाठक के समक्ष नायक को साकार वर्णन करता है।

पाठ के आस-पास

प्रश्न. 1 मियाँ नसीरुद्दीन की कौन-सी बातें आपको अच्छी लगीं?

उत्तर- मियाँ नसीरुद्दीन की निम्नलिखित बातें हमें अच्छी लगीं-

- वे काम को अधिक महत्त्व देते हैं। बातचीत के दौरान भी उनका ध्यान अपने काम में होता है।
- वे हर बात का उत्तर पूरे आत्मविश्वास के साथ देते हैं।
- वे शागिदों का शोषण नहीं करते। उन्हें काम भी सिखाते हैं तथा वेतन भी देते हैं।
- वे छप्पन तरह की रोटियाँ बनाने में माहिर हैं।
- उनकी बातचीत की शैली आकर्षक है।

प्रश्न. 2 तालीम की तालीम ही बड़ी चीज होती है-यहाँ लेखक ने तालीम शब्द का दो बार प्रयोग क्यों किया है? क्या आप दूसरी बार आए तालीम शब्द की जगह कोई अन्य शब्द रख सकते हैं? लिखिए।

उत्तर- तालीम शब्द का प्रयोग दो बार भाषा-सौंदर्य में वृद्धि करने के लिए किया गया है। यहाँ तालीम का अर्थ शिक्षा और समझ से लिया गया है। पहली बार उर्दू शब्द तालीम का अर्थ है-शिक्षा। दूसरा अर्थ है-समझ और पकड़ अर्थात् शिक्षा की पकड़ भी होनी चाहिए। यह कथन मियाँ उस समय कहते हैं जब वे बता रहे थे कि बचपन से इस नानबाई काम को देखते हुए भट्टी सुलगाना, बरतन धोना आदि अनेक कामों को करते-करते उन्हें तालीम की पकड़ आती गई। अतः यहाँ दूसरी बार प्रयुक्त तालीम शब्द के स्थान पर पकड़/समझ को प्रयोग किया जा सकता है।

प्रश्न. 3 मियाँ नसीरुद्दीन तीसरी पीढ़ी के हैं जिसने अपने खानदानी व्यवसाय को अपनाया। वर्तमान समय में प्रायः लोग अपने पारंपरिक व्यवसाय को नहीं अपना रहे हैं। ऐसा क्यों?

उत्तर- मियाँ नसीरुद्दीन के पिता मियाँ बरकतशाही तथा दादा मियाँ कल्लन खानदानी नानबाई थे। मियाँ ने भी इसी व्यवसाय को अपनाया। आजकल लोग अपने पारंपरिक व्यवसाय को नहीं अपना रहे। इसके कई कारण हैं-

- व्यवसाय से निर्वाह न होना, क्योंकि पुराने व्यवसायों से आय बहुत कम होती है।
- नए तरह के व्यवसायों का प्रारंभ होना। नयी तकनीक व रुचियों में बदलाव के कारण नए-नए व्यवसाय शुरू हो गए हैं जिनमें आमदनी ज्यादा होती है।

iii. शिक्षा के प्रसार के कारण सेवा क्षेत्र में बढ़ोतरी हुई है। अब यह क्षेत्र उद्योग व कृषि क्षेत्र से भी बड़ा हो गया है। पहले यह क्षेत्र आज की तरह व्यापक नहीं था।

प्रश्न. 4 'मियाँ, कहीं अखबारनवीस तो नहीं हो? यह तो खोजियों की खुराफ़ात है'-अखबार की भूमिका को देखते हुए इस पर टिप्पणी करें।

उत्तर- आज का युग विज्ञापन का युग है और आज समाचार-पत्र विज्ञापन का उत्तम साधन है। गाँव, शहर, कस्बा या महानगर सभी जगह अनेक अखबार छपते हैं। होड़ा-होड़ी में जोरदार से जोरदार गरमागरम तेज़ खबरें छापकर हरेक, दूसरे से ऊपर आना चाहता है। ऐसे में पत्रकारों को प्रतिपल नई से नई खबर चाहिए; चाहे सामान्य-सी बातें हो, वे उसे बढ़ा-चढ़ाकर सुर्खियों में ले आते हैं। एक की चार लगाकर, मिर्च-मसाले के साथ पेश करते हैं। यहाँ मियाँ नसीरुद्दीन अखबार पढ़ने और छापनेवालों दोनों से ही नाराज़ हैं जोकि काफ़ी हद तक ठीक है। कई बार अखबारवाले बात को ऐसा तोड़-मरोड़कर पेश करते हैं और बाल की खाल उधेड़ डालते हैं जिससे साधारण लोग परेशान हो जाते हैं। यहाँ दूसरा पहलू भ्रष्ट लोगों को लाइन पर लाने के लिए ठीक भी है।

पकवानों को जानें

प्रश्न. 1 पाठ में आए रोटियों के अलग-अलग नामों की सूची बनाएँ और इनके बारे में जानकारी प्राप्त करें।

उत्तर- सूची -

- बाकरखानी
- शीरमाल
- ताफ़तान
- बेसनी
- खमीरी
- रूमाल
- गाव
- दीदा
- गाजेबान
- तुनकी

अपने परिवेश के ऐसे लोगों से संपर्क बनाएँ जो इन रोटियों की जानकारी दे सकें।

भाषा की बात

प्रश्न. 1 तीन-चार वाक्यों में अनुकूल प्रसंग तैयार कर नीचे दिए गए वाक्यों का इस्तेमाल करें।

- पंचहजारी अंदाज़ से सिर हिलाया।
- आँखों के कंचे हम पर फेर दिए।
- आ बैठे उन्हीं के ठीये पर।

उत्तर- कक्षा में सहपाठियों के साथ मिलकर सभी छोटे-छोटे प्रसंग तैयार करके सुनाइए जिसमें मुहावरों की भाँति उपयुक्त वाक्यांशों का प्रयोग किया गया है।

यथा – बूढ़े भिखारी ने पंचहजारी अंदाज़ में मुझे आशीर्वाद देते हुए कहा- 'जा बच्चा हमारी दुआ तेरे साथ है' और पैसे अपनी झोली में रखकर आँखों के कंचे मुझ पर फेरता हुआ चला गया। मेरे साथी ने बताया पिछले दस साल से यह इसी जगह भीख माँगता है। पहले इसके पिता जी माँगते थे और फिर यह आ बैठा उन्हीं के ठीये पर।

प्रश्न. 2 बिटर-बिटर देखना यहाँ देखने के एक खास तरीके को प्रकट किया गया है? देखने संबंधी इस प्रकार के चार क्रिया-विशेषणों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

उत्तर-

- घूर-घूर कर देखना**- बस में युवक सुंदर लड़की को घूर-घूरकर देख रहा था।
- टकटकी लगाकर देखना**- दीपावली पर दीयों की पक्ति को टकटकी लगाकर देखा जाता है।
- चोरी-चोरी देखना**- मोहन पार्क में बैठी युवती को चोरी-चोरी देख रहा था।
- सहमी-सहमी नज़रों से देखना**- शेर से बचने में सफल विनोद सबको सहमी-सहमी नज़रों से देखता रहा।

प्रश्न. 3 नीचे दिए वाक्यों में अर्थ पर बल देने के लिए शब्द-क्रम परिवर्तित किया गया है। सामान्यतः इन वाक्यों को किस क्रम में लिखा जाता है? लिखें।

- मियाँ मशहूर हैं छप्पन किस्म की रोटियाँ बनाने के लिए।
- निकाल लेंगे वक्त थोड़ा।

- iii. दिमाग में चक्कर काट गई है बात।
- iv. रोटी जनाब पकती है आँच से।

उत्तर-

- i. मियाँ मशहूर हैं छप्पन किस्म की रोटियाँ बनाने के लिए।

सही क्रम – मियाँ छप्पन किस्म की रोटियाँ बनाने के लिए मशहूर हैं।

- ii. निकाल लेंगे वक्त थोड़ा।

सही क्रम – थोड़ा वक्त निकाल लेंगे।

- iii. दिमाग में चक्कर काट गई है बात।

सही क्रम – बात दिमाग में चक्कर काट गई है।

- iv. रोटी जनाब पकती है आँच से।

सही क्रम – जनाब रोटी आँच से पकती है।